e-Library Science Research Journal
ISSN : 2319-8435
Impact Factor : 2.2030(UIF)
Vol.3 | Issue.3 | Jan. 2015
Available online at www.lsrj.in

“ऑनलाइन शोध पत्रिकाओ के प्रति पाठको की जागरूकता एवं प्रयोग : पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय अध्ययनशाला पर आधारित एक सर्वेक्षण”

ब्यूटी चौधरी एवं सुपर्ण सेनगुप्ता

ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययन शाला
पं.रविशंकरशुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश – शोध पत्रिका का इतिहास अत्यंत पुराना है सन् १६६५ मे पहला शोध पत्रिका डिस् स्काभन प्रकाशित हुआ था जिसमे केवल मौलिक शोध का प्रकाशन किया गया था। आनलाइन शोध पत्रिका से अर्थ शोध पत्रिका के संगणक नेटवर्क पर उपलब्ध आनलाइन संस्करणों से होता है जो की इंटरनेट के द्वारा उपलब्ध होता है। इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका किसी शोध पत्रिका का कम्प्युटराइजड/सी डी रोम व अन्य इंटरनेट की उपस्थिति को कहा जाता है । इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका को अन्य नाम से जैसे की पेपर लेस शोध पत्रिका, आनलाइन शोध पत्रिका, स्कॉलर इ शोध पत्रिका व वर्चुअल शोध पत्रिका और सी डी रोम शोध पत्रिका कहा जाता है । हेरोड्र्स एवं लाइब्रेरिंस ग्लोसरी संदर्भ पुस्तक के अनुसार वह शोध पत्रिका जिसका निर्माण संदर्भ एवं वितरण इलेक्ट्रोनिकली किया जाता है उसे इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका कहा जाता है । साधारण शब्दो मे इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका का लेखन,एडिटिंग,रिफरिंग एवं वितरण बिना पेपर की सहायता से इलेक्ट्रोनिक द्वारा किया जाए।

प्रस्तावना–

इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका कम्प्युटर एवं अन्य संचारण तकनिकी द्वारा प्राप्त की जाती है । इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका मुख्यतः वेव व इंटरनेट माध्यमो के द्वारा जैसे की www, e-mail द्वारा संचालित होता है इसमे asc11 व HTML/www अथवा PDF के रूप मे उपस्थित रहती है। ओकेरसन के अनुसार इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिकाओ के शीर्षको की संख्या ३६३४(१९९७) से बढ़ कर ८०००(१९९९) तक हो गई ।

इस प्रकार आजकल ग्रंथालयो मे इलेक्ट्रोनिक खोज द्वारा सम्पूर्ण लेख एवं शोध पत्रिका उपलब्ध कराई जाती है, इसी कारण प्रतिवर्ष इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका की उपलब्धता एवं उपयोगिता निरंतर दिन-प्रतिदिन, प्रति क्षण लगातार बढ रही है । इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिका का उपयोग कुछ कारकों पर निर्भर करता है जैसे विषयवार, उपयोगकर्ता की उम्र, संस्थान एवं इलेक्ट्रोनिक शोध पत्रिकाओ के प्रति जागरूकता ।

युजीसी इन्फोनेट के प्रार्दुभाव के साथ यह संभव हो सका है कि विश्वविद्यालय द्वारा अच्छी संख्या मे उपयोगकर्ताओ मे शोध पत्रिका तथा डाटा बेस उपलब्ध कराये जा सके । पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय मे इनफ्लीबनेट के द्वारा 8500 से अधिक विश्व स्तरीय शोध पत्रिकाएँ पाठको हेतु 24 घण्टे सातो दिन निःशुल्क उपलब्ध है।यू.जी.सी. सूचना कर्न्सोशियम के अन्तर्गत उपलब्ध श्रोतो की उपलब्धता के द्वारा यह आवश्यक हो गया है कि इन स्रोतो को अपेक्षित पाठक द्वारा कितना और कैसे उपयोग किया जा रहा है उसका अध्ययन किया जा सके । इस अध्ययन मे एक सर्वेक्षण किया गया। इसमे पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के अन्तर्गत यू.जी.सी इन्फोनेट के उपयोग के संबध मे एक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की प्रविधि

वर्तमान अध्ययन मे सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। इसमे एक प्रश्नावली तैयार किया गया जिसके द्वारा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के ग्रंथालय मे विभिन्न पाठको की ऑनलाइन शोध पत्रिका के प्रति जानकारी एवं उपयोग के संबंध मे प्रश्न पुछे गये।

इस उद्देश्य के लिये 125 प्रश्नावलीयो का वितरण विश्वविद्यालय के शिक्षको, शोधार्थियो एम. फिल छात्रो एवं स्नातकोत्तरो के मध्य वितरित किए गए। इन वितरित प्रश्नावलीयो मे से 100 प्रश्नावलीयो का संकलन किया गया। इसके पश्चात् तथ्यो का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री के माध्यम से किया गया तत्पश्चात् इनका विश्लेषण कर सारणी बनाया गया तथा उनकी व्याख्या की गई। इस प्रकार संकलित आकड़ो के विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नवर्णित हैः–

01. पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के ग्रंथालय मे उपलब्ध ऑनलाइन शोध पत्रिकाओ के प्रति पाठको मे जागरूकता ज्ञात करना।
02. पाठको के द्वारा ऑनलाइन शोध पत्रिकाओ के उपयोग करने के पिछे उसके उद्देश्य का पता लगाना ।
03. पाठको के द्वारा ऑनलाइन शोध पत्रिकाओ के प्रयोग अन्तराल (आवृत्ति) को ज्ञात करना।
04. पाठको के द्वारा ऑनलाइन शोध पत्रिकाओ को देखने और उपयोग करने मे उत्पन्न बाधाओ एवं समस्याओ के बारे मे अध्ययन करना।
05. यह ज्ञात करना की क्या पाठको को ऑनलाइन शोध पत्रिका के उपयोग हेतु उन्हे खोजने और पढ़ने के प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है।
06. ऑनलाइन शोध पत्रिका के उपयोग करने हेतु सविधाओ और सेवाओ मे सुधार हेतु समुचित सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन का महत्व

पं. रविशकर शुक्ल विश्वविद्यालय ग्रंथालय मे विभिन्न विभागो एवं विषयो के पाठक अध्ययन करने एवं अपनी जिज्ञासाओ को शांत करने, अपने प्रश्नो का उत्तर ढूंढने आते है जिनमे मुख्यतः शिक्षक शोधार्थि एवं छात्र सम्मिलित है। इस प्रकार इस ग्रंथालय मे अनेको पकार के पाठ्य पुस्तके एवं शोध पत्रिकाऍ, समाचार पत्र एवं अन्य ई सुचनाऍ उपलब्ध है।

इस प्रकार पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविधालय ग्रंथालय मे विभिन्न प्रकार के प्रिंट पाठ्य पुस्तको, शोध पत्रिकाओ के अलावा अनेको संगणको को पाठ्को के लिए व्यवस्थित किया गया है। जिसमे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध करायी गई है। इस प्रकार इनफ्लिबनेट के द्वारा कान्सोर्शिया के माध्यम से अनेको शोध पत्रिकाऍ विभिन्न विषयो के उपलब्ध है। जिसका उपयोग उपयोगकर्ता हर रोज 24 घण्टे सातो दिन कर सकते है।

अतः यह अध्ययन दर्शाता है कि पं. रवि शंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ग्रंथालय द्वारा पाठको को प्रदान की जा रही इन इनफ्लिबनेट की सुविधा के बारे में पाठक कितने अधिक जानकारी रखते हैं, कितने अधिक जागरुक है तथा इसका प्रयोग कितना और किस प्रकार से करते ह।

संकलित तथ्यो का विश्लेषण

सारणी 1 ऑनलाईन शोध पत्रिका से परिचित पाठक

क्र.	पाठक	शिक्षक%	शोधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोतर%	कुल%
1	हाँ	25	25	25	25	100
2	नहीं	0	0	0	0	0
3	कुल	25	25	25	25	100

सर्वे के दौरान यह ज्ञात हुआ कि सभी पाठक ऑनलाईन शोध पत्रिका से परिचित हैं।

सारणी 2 पाठको द्वारा ऑनलाईन शोध पत्रिका का उपयोग

क्र.	पाठक	शिक्षक%	शोधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोत्तर %	कुल%
1	हाँ	**25**	**25**	**25**	**25**	**100**
2	नहीं	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**
3	कुल	**25**	**25**	**25**	**25**	**100**

उक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि सभी पाठक ऑनलाईन शोध पत्रिका का उपयोग करते हैं।

सारणी 3 पाठको के द्वारा ऑनलाईन शोध पत्रिका के अध्ययन से संबंधित दैनिक गतिविधियो पर प्रभाव

बढ़ोत्तरी

क्रं	प्रभाव	शिक्षक%	शाधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोत्तर %	कुल%
1	अध्ययन समय मे	14	18	25	25	82
2	अध्ययन गति मे	25	25	25	25	100
3	कार्य गति मे	25	25	25	25	100
4	शोध प्रकाशन की संख्या में	35	25	10	04	74
5	अध्यापन गति मे	25	9	6	0	40
6	विषय संम्बधि अद्यतन ज्ञान	25	25	25	25	100

इस सारणी से यह ज्ञात होता है कि लगभग सभी पाठको के द्वारा ऑनलाईन शोध पत्रिका के उपयोग से उनके अध्ययन गति में, कार्य गति में तथा उनके विषय संम्बधि अद्यतन ज्ञान में बढ़ोत्तरी हुई। लगभग तीन चौथाई पाठको के अध्ययन समय में तथा शोध प्रकाशन की संख्या में तथा अध्यापन गति में बढ़ोत्तरी हुई । 3

सारणी 4 ऑनलाईन शोध पत्रिका के उपलब्धता तथा उपयोग से मुद्रित सामग्री के प्रति पाठको की रूची मे परिवर्तन

क्रं	रुचि मे परिवर्तन	शिक्षक%	शाधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोत्तर%	कुल%
1	हाँ	14	19	14	12	59
2	नही	11	6	11	13	41

इस सारणी से यह ज्ञात होता है कि लगभग तीन चौथाई पाठको के ऑनलाईन शोध पत्रिका के उपलब्ध तथाउपयोग से मुद्रित सामग्री के प्रति रूची मे परिवर्तन आई जबकि दो चौथाई पाठको में कोई रूचि परिवर्तन नहीं देखा गया।

सारणी 5 ग्रन्थालय ऑनलाईन शोध पत्रिका का उपयोग

क्रं	उपयोग	शिक्षक%	शाधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोत्तर%	कुल%
1	बहुत कठिन	1	1	1	2	5
2	थोड़ा कठिन	6	7	9	8	30
3	थोड़ा सरल	7	8	6	7	28
4	बहुत सरल	11	9	9	8	37

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अधिक से अधिक पाठको को ग्रन्थालय ऑनलाइन शोध पत्रिका का उपयोग बहुत सरल लगता है इसी प्रकार कुछ पाठको को थोड़ा कठिन एवं थोड़ा सरल लगता है जबकि केवल कुछ ही पाठको को बहुत कठिन लगता है ।

सारणी 6 ऑनलाईन शोध पत्रिका को खोजने मे सफलता

क्रं	सफलता	शिक्षक%	शोधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोत्तर %	कुल%
1	हमेशा	16	12	8	10	46
2	कभी कभी	9	13	17	15	54

इस तालिका से यह ज्ञात होता है कि 46 प्रतिशत पाठक ग्रंथालय मे उपलब्ध ऑनलाईन शोध पत्रिका को खोजने मे हमेशा सफल होते हैं तथा 54 प्रति”ात पाठक आनलाईन शोध पत्रिका की खोज करने में कभी–कभी सफल होते हैं।

सारणी 7 ग्रन्थालय मे उपलब्ध ऑनलाईन भाोध पत्रिका के प्रति पाठको की संतुष्टि

क्रं	स्तर	शिक्षक%	शाधार्थि%	एम फिल%	स्नातकोत्तर%	कुल%
1	उच्च संतुष्ट	1	0	0	0	1
2	संतुष्ट	14	16	19	14	63
3	कम संतुष्ट	8	8	6	3	25
4	संतुष्ट नहीं	2	1	0	8	11

यह सारणी यह स्पष्ट करता है कि अधिक संख्या में पाठक पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ग्रंथालय मे उपलब्ध ऑनलाईन शोध पत्रिका से संतुष्ट हैं। जबकि कुछ पाठक कम संतुष्ट एवं संतुष्ट नहीं है ।

सुझाव

इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव को प्राप्त किया गया हैं :–

1 पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर मे ऑनलाईन शोध पत्रिका के उपयोग हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए।

2 ऑनलाईन शोध पत्रिका के अधिकाधिक प्रयोग हेतु ग्रंथालय कर्मचारियो द्वारा इनके उपयोग से लाभ को बताकर उपयोगकर्ताओ मे ऑनलाईन शोध पत्रिका के प्रति जागरुक्ता लानी चाहिए।

3 ग्रंथालय कर्मचारियो द्वारा ऑनलाईन शोध पत्रिका के उपयोग के बारे मे जानकारी देकर पाठको की जागरुक्ता एवं ऑनलाईन शोध पत्रिका के प्रयोग मे मदद करनी चाहिए।

4 पाठको के अनुसार ग्रंथालय मे अधिक संख्या मे संगणको को व्यवस्थित किया जाना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा पाठक इस सुविधा का लाभ उठा सके।

5 पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ग्रंथालय मे विभिन्न विषयो की और अधिक ऑनलाईन शोध पत्रिकाओ की आवश्यक्ता हैं।

निष्कर्ष

संगणक के निर्माण एवं प्रादूर्भाव ने सूचना के वितरण और खोज करने की तरीको मे आ”चर्यजनक क्रांति लाई हैं।वि”ोष तौर पर औनलाईन शोध पत्रिका और डाटाबेस सूचना की महत्वपूर्ण स्त्रोत होते जा रहे

हैं। पं. रविशंकर शुक्ल वि"वविद्यालय ग्रंथालय मे ऑनलाईन शोध पत्रिका के द्वारा नवीनतम सूचना प्रस्तुत की जा रही हैं। प्रस्तुत सर्वे से यह ज्ञात होता हैं कि पाठको द्वारा ऑनलाईन शोध पत्रिका का उपयोग भरपुर परन्तु उम्मीद से थोड़ा कम किया जा रहा है। अतः यह आव"यक है कि पं. रवि"ांकर शुक्ल वि"वविद्यालय परिसर मे एसे मार्ग द"ान और प्र"ाक्षण के कार्यक्रम प्रारंभ किये जाए जिनके द्वारा ऑनलाईल शोध पत्रिका का अधिकतम उपयोग सूनि"चत किया जा सके। उपयोगकर्ताओ को ग्रंथालय कि सेवाओ के यथेष्ट उपयोग मे सक्षम बनाने हेतु ग्रंथालय के कर्मचारीयो का भी महत्वपूर्ण स्थान होता ह और ऑनलाईन शोध पत्रिका के अधिकतम उपयोग हेतु प्र"ाक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त अधिक संख्या मे और सही अवस्था मे संगणको को उपलब्ध कराया जाना आव"यक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Carol Tenopir and Donald King (2000), *Towards Electronic Journals*. Special Libraries Association.
2. Sasse (Margo) and Winkler (B Jean) (1993). Electronic journals: a formidable challenge for libraries. *Advances in Librarianship*. 17: 149-173.
3. Singh, S.P. and Krishan Kumar (2005). "Special Libraries in the Electronic Environment." New Delhi: Bookwell.
4. Okerson (A) (2000). Are we there yet? Online e-resources ten years after. *Library Trends*, 48: 671-694.
5. Prytherch (R), Ed. (2000).Harrod's Librarians' glossary and reference book. Ed.9.Aldershot: Gower.
6. Kumar, S. and Grover, V. K. (2007), "Electronic journals: Impact on scholarly communication, user and Library", Library Herald, Vol. 45 No.4, pp. 325-33.

ब्यूटी चौधरी

ग्रंथालय पं.रविशंकरशुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)